॥ देवी स्तुति ॥

यह स्तुति भविष्यपुराण और शिवरहस्य में वर्णित है जहाँ से निर्णयसिन्धु, दुर्गाभक्तितरंगिणी आदि में उद्धृत की गयी है।

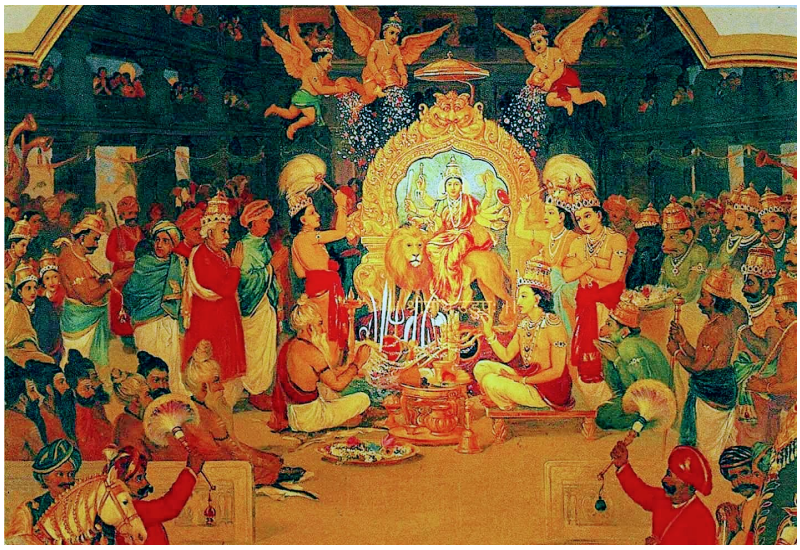

शिवरहस्य के अन्तर्गत कहा गया है कि तपस्या, तीर्थयात्रा, दान तथा प्रभूत दक्षिणा वाले यज्ञों के विधिपूर्वक अनुष्ठान से भी अधिक फल देवी की भक्तिपुरस्सर की गयी केवल स्तुति से ही पूजक को प्राप्त होता है। देवी की स्तुति से पूजक को दीर्घायु, आरोग्य, सौख्य, सम्पति तथा सातिशय अनुरागवती वरांगनाओं की प्राप्ति होती है।

पूजक शास्त्रोक्त रीति से देवी का पूजन संपन्न करने के उपरांत प्रसन्नचित होकर कृताञ्जलि मुद्रा में देवी स्तुति का पाठ करे।

भविष्यपुराणे

दुर्गां शिवां शान्तिकरीं ब्रह्माणीं ब्रह्मणः प्रियाम्।
सर्वलोक-प्रणेत्रीं च प्रणमामि सदाशिवाम्।।
मङ्गलां शोभनां शुद्धां निष्कलां परमां कलाम्।
विश्वेश्वरीं विश्वमातां चण्डिकां प्रणमाम्यहम्।।
सर्वदेवमयीं देवीं सर्वरोगभयापहाम्।

ब्रह्मेशविष्णुनमितां प्रणमामि सदा उमाम् ।।

विन्ध्यस्थां विन्ध्यनिलयां दिव्यस्थाननिवासिनीम् ।

योगिनीं योगमातां च चण्डिकां प्रणमाम्यहम् ।।

ईशानमातरं देवीमीश्वरीमीश्वरप्रियाम् ।

प्रणतोऽस्मि सदा दुर्गां संसारार्णवतारिणीम् ।।

य इदं पठति स्तोत्रं शृणुयाद् वापि यो नरः।

स मुक्तः सर्वपापस्तु मोदते दुर्गया सह ।।

स्तुति पाठ के अनन्तर शिवरहस्य में प्रोक्त मूलोद्धृत मन्त्रों से वर की प्रार्थना पूजक को करनी चाहिए।

अथ वरप्रार्थनं शिवरहस्ये

मन्त्रेणानेन वृत्रारे प्रार्थयेत्तां सुरेश्वरीम्।

महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनि।।

द्रव्यमारोग्यविजयं देहि देवि नमोऽस्तु ते।

भूतप्रेतपिशाचेभ्यो रक्षोभ्यश्च महेश्वरि।।

देवेभ्यो मानुषेभ्यश्च भयेभ्यो रक्ष मां सदा।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
उमे ब्रह्माणि कौमारि विश्वरूपे प्रसीद मे।।

शिल्पिशास्त्रे

रुपन्देहि यशोदेहि भाग्यं भगवति देहि मे।
पुत्रान्देहि धनन्देहि सर्वान्कामाम् प्रदेहि मे।।

इति वारप्रार्थनम्

Essence Of Astrology
- By Lokesh Agrawal
http://essenceofastro.blogspot.com/
https://www.facebook.com/essenceofastro